पाठ-9

स्वाधीनता आन्दोलन स्वतंत्रता प्राप्ति एवं विभाजन

इन दिनों महात्मा गाँधी दक्षिण अफ्रीका में थे। वहाँ भी अंग्रेज, गैर-अंग्रेजों से भेदभाव बरतते थे।

गाँधीजी को भी उनके इस भेदभाव को सहना पड़ा, जब वह रेलगाड़ी के उस डिब्बे में बैठे जिसमें सिर्फ अंग्रेज बैठ सकते थे। गाँधी जी के पास इस डिब्बे में बैठने का टिकट था फिर भी उन्हें गाड़ी से उतार दिया गया इसलिए क्योंकि वह श्वेत नहीं थे।

वहाँ भारतीयों के साथ रंगभेदी सरकार के दुर्व्यवहार को देखकर महात्मा गाँधी ने सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ किया। अन्त में अंग्रेजी सरकार को झुकना पड़ा था। सन् 1915 ई0 में महात्मा गाँधी भारत लौट आए।

गाँधी जी का नेतृत्व (1919-1935)

प्रथम विश्वयुद्ध के समय महात्मा गाँधी के नेतृत्व में भारतीयों ने अंग्रेजों की बहुत सहायता की।

गाँधी जी ने सोचा कि इस युद्ध की समाप्ति पर अंग्रेज देश को आजाद कर देंगे, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। ब्रिटिश सरकार ने कांग्रेस और क्रान्तिकारियों की बढ़ती हुई शक्ति का दमन करने के लिए मार्च, 1919 ई. में रोलेट एक्ट पास कर दिया, जिसके अन्तर्गत सरकार किसी भी व्यक्ति को बिना मुकदमे के कैद कर सकती थी। गाँधी जी ने फरवरी 1919 ई. में इसके विरोध में सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया।

अहिंसा और सत्याग्रह

स्वराज्य के लिए अंग्रेजों की हत्या करने का रास्ता सबको उचित नहीं लगता था। हिंसा व हत्या का विरोध करने वालों में गाँधी जी प्रमुख थे। उनका मानना था

कि अगर हमारी बात सत्य है तो बिना जोर-जबरदस्ती व हिंसा के उसे प्राप्त करना चाहिए। अतः हमें सत्य के लिए सिर्फ आग्रह करना चाहिए यानी सत्याग्रह। सत्य को हिंसा से प्राप्त करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।

गाँधीजी ने सत्याग्रह करने के लिए ये कार्यक्रम बनाए-

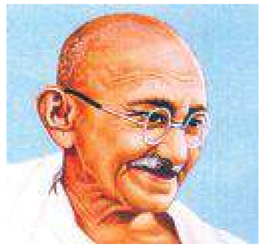

महात्मा गांधी

- अन्याय करने वाले का सहयोग न करना यानी असहयोग करना।
- अनुचित लग रही बातों को मानने से इनकार कर देना यानी अवज्ञा करना।

गाँधी जी ने राष्ट्रीय आन्दोलन में अंग्रेज शासन से असहयोग और अवज्ञा का तरीका जोड़ा।

जब गाँधी जी राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल हुए तो उस आन्दोलन में एक नया मोड़ आया। गाँधी जी लोगों की छोटी-छोटी व ठोस दिक्कतों को हल करने के लिए आन्दोलन छेड़ते थे। वह अंग्रेज सरकार से माँग करते थे कि लगान कम करें, नमक पर कर हटाएँ, जंगल के उपयोग पर पाबंदी हटाएँ, शराब की बिक्री बंद करें (शराब की बिक्री से सरकार को बहुत आय मिलती थी)। गाँधी जी के नेतृत्व में हजारों की संख्या में लोग अपनी इन ठोस समस्याओं से लड़ने के लिए आन्दोलन की राह पर निकलने लगे। इसके पहले के किसी भी प्रयास से भारी संख्या में आम लोग राष्ट्रीय आन्दोलन में नहीं उतरे थे।

गाँधीजी ने ही देश भर में छुआछूत मिटाने का अभियान भी शुरू किया ताकि लोग नया राष्ट्र बनाने के आन्दोलन में शामिल हो सकें।

एक बार गाँधीजी, दक्षिण अफ्रीका में रेलयात्रा कर रहे थे। वे उस डिब्बे में बैठ गए जो गोरे लोगों के लिए आरक्षित था उन्हें एक गोरे ने डिब्बे से बाहर धकेल दिया और कहा कि ''एक काला भारतीय, उनके डिब्बे में यात्रा कैसे कर सकता है।'' यह उनका सरासर अपमान था। उन्होंने महसूस किया कि गोरे लोगों में उनके आत्म सम्मान और गरिमा के प्रति बिल्कुल आदर नहीं था इसलिए उन्होंने गाँधी जी को डिब्बे से बाहर धकेल दिया। इस कटु अनुभव ने गाँधी जी को भारतीयों की गरिमा के उत्थान और अन्याय से लड़ने की प्रेरणा दी।

उन्हांने महसूस किया कि भारत में भी लोग आपस में ही जाति-मजहब, ऊँच-नीच, सवर्ण-दलित, भाषा सम्प्रदाय के नाम पर विभिन्न समूहों में बटे हुए हैं। इसलिए ये गोरे अंग्रेज हमारे देश पर शासन कर रहे हैं। उन्होंने भारत में सर्वप्रथम सभी धर्मों एवं सम्प्रदाओं के लोगों को राष्ट्रवाद एवं भाई-चारे की लड़ी में पिरोकर अंग्रेजों के खिलाफ जंग छेड़ दी गाँधीजी के इसी प्रयास के बदौलत ही आज हमारा यह देश भारत आजाद हो सका है।

जलियाँवाला काँड 1919

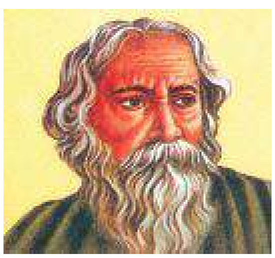

रवीन्द्र नाथ टैगोर

इसी समय अमृतसर में 13 अप्रैल, 1919 ई. को एक भयानक हत्याकाण्ड हुआ। पंजाब के नेता डॉ0 सत्यपाल और डॉ0 सैफउद्दीन किचलू की गिरफ्तारी के विरोध में अमृतसर के जलियाँवाला बाग में एक विशाल सभा का आयोजन हुआ। सभा के मध्य में ही पंजाब के सैनिक कमाण्डर जनरल डायर ने सैनिकों को लेकर बाग को घेर लिया। बिना चेतावनी दिए हुए उसने निहत्थी भीड़ पर गोली चलाने का आदेश दे दिया। इससे कई सौ निर्दोष लोगों की मृत्यु हो गयी और हजारों लोग घायल हुए।

जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड से समस्त देश में हाहाकार मच गया। इसके विरोध में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपनी ''सर'' की उपाधि वापस कर दी। इसने मध्यवर्गीय बुद्धिजीवियों के राष्ट्रवाद को जन-राष्ट्रवाद के रूप में परिवर्तित कर

दिया, जिसमें किसान, मजदूर, छात्र, दस्तकार, कारीगर आदि सम्मिलित हुए। अब राष्ट्रीय आन्दोलन पहले की अपेक्षा अधिक दृढ़ हो गया। इसमें हिन्दू-मुस्लिम एकता का अभूतपूर्व प्रदर्शन हुआ, जिससे भारतीय राष्ट्रवाद को काफी बल मिला।

असहयोग आन्दोलन 1920-1922

ऐसी विकट स्थिति में गाँधीजी ने देश भर में असहयोग आन्दोलन शुरू किया। 1857 के विद्रोह के बाद पूरे देश में एक साथ अंग्रेजी हुकूमत के विरोध में होने वाला यह पहला बड़ा आन्दोलन था। इसका उद्देश्य था, अन्यायी अंग्रेज शासन का सहयोग न करना।

आइए इस आन्दोलन के दौरान घटित होने वाली कुछ गतिविधियों की झलकियाँ देखें-

1.”अंग्रेजों को भारत में सरकार चलानी है तो खुद चलाएँ। हम क्यों उनका शासन संभालें ?“ यह कहते हुए कई लोगों ने सरकारी पदों से इस्तीफा दे दिया।

2.अनेकों छात्रों ने सरकारी स्कूल-कॉलेज छोड़ दिए और स्वदेशी स्कूलों में भर्ती होने लगे।

3.अंग्रेजी कपड़े व शराब की दुकानों पर धरने दिये गये। अंग्रेजी चीजों के बहिष्कार के साथ-साथ स्वदेशी चीजों को बढ़ावा देने की कोशिश भी हुई।

4.देश भर में कई वकीलों ने कचहरी में वकालत छोड़ दी।

5.कई जगह परिषद् के चुनावों में लोगों ने वोट नहीं डाले

अंग्रेजी वस्तुओं का बहिष्कार करते भारतीय

6.गाँधीजी ने लोगों द्वारा चरखा चलाने व सूत कातने का अभियान जोड़ दिया। इससे घर-घर में देश को आत्म-निर्भर बनाने की भावना मजबूत बनी।

7.छोटे-बड़े शहरों में सैकड़ों लोगों के जत्थे जुलूस में निकलते और पुलिस के आगे गिरफ्तारी देते। पुलिस उन्हें रोकती, उन पर लाठियाँ बरसाती, पर लोग पुलिस पर हाथ भी न उठाते। एक जत्था पिटते हुए गिरफ्तार हो जाता तो उसके

पीछे दूसरा जत्था 'इंकलाब जिन्दाबाद', 'चरखा चला-चला के हम स्वराज्य लेंगे' और 'महात्मा गाँधी की जय' के नारे लगाते हुए आता और शान्तिपूर्वक गिरफ्तारी देता। अंग्रेज शासन की हिंसा का मुकाबला लोग शान्ति और दृढ़ता से सत्य के लिए आग्रह करके करते।

8.1921 में इंग्लैण्ड का राजकुमार भारत की यात्रा पर आया तो उसका बहिष्कार किया गया- लोग उसके स्वागत में नहीं गए और मुम्बई (बम्बई) शहर में उस दिन हड़ताल रही।

दूर-दराज के इलाकों में, गाँव-गाँव में गाँधीजी की खबर फैल गई। किसानों, आदिवासियों, मजदूरों में भी यह जोश भर गया कि अब चंद दिनों में अंग्रेज राज्य खत्म हो जाएगा और "गाँधीजी का स्वराज्य" का स्वप्न पूरा हो जाएगा।

इस तरह देश भर में उथल-पुथल मच गई और लोगों में अन्याय व अत्याचार के खिलाफ अपने अधिकारों के लिए लड़ने की जबरदस्त भावना उमड़ पड़ी।

चौरी-चौरा काण्ड

इसी समय उत्तर प्रदेश में चौरी-चौरा नामक स्थान के किसान थाने पर अपने विरोध प्रदर्शन के लिए आए थे क्योंकि पुलिस ने उनके एक साथी को बहुत मारा था। जब वे थाने पर आए तो पुलिस ने उन पर भी गोली चलानी शुरू कर दी। गुस्से में आकर किसानों ने थाने में आग लगा दी।

इस घटना से गाँधी जी को काफी दुःख हुआ और 12 फरवरी 1922 को उन्होंने आन्दोलन वापस ले लिया। उनका मानना था कि हिंसा से स्वाधीनता प्राप्त नहीं की जा सकती। उनके अनुसार किसी भी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अपनाये गये तरीके भी महत्वपूर्ण हैं। अब गाँधी जी ने रचनात्मक कार्य करने का निश्चय किया। इसमें हाथ से कताई-बुनाई, छुआ-छूत का निवारण एवं साम्प्रदायिक एकता की स्थापना आदि थे।

गाँधी जी ने चौरी-चौरा काण्ड के बाद असहयोग आन्दोलन वापस क्यों लिया ?

इस प्रकार जब असहयोग आन्दोलन ठण्डा पड़ गया तो अंग्रेज सरकार ने इस अवसर का लाभ उठाया। गाँधी जी 10 मार्च, 1922 ई0 को कैद कर लिये गये और उन्हें 6 वर्ष के लिए सजा दे दी गई। यद्यपि असहयोग आन्दोलन असफल रहा, लेकिन इसके कारण राष्ट्रवादी विचार पूरे देश में फैल गये।

सशस्त्र क्रान्तिकारियों का योगदान

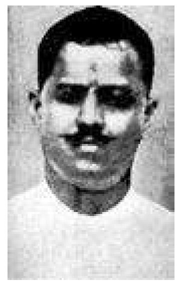

राम प्रसाद बिस्मिल

प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान क्रान्तिकारी आन्दोलनकारियों को बुरी तरह कुचल दिया गया। बहुत से नेता जेल भेज दिये गये और शेष इधर-उधर बिखर गये। 1920 ई0 के प्रारम्भ में क्रान्तिकारियों को जेल से रिहा कर दिया गया। इसके कुछ समय बाद ही कांग्रेस ने असहयोग आन्दोलन छेड़ दिया। क्रान्तिकारी सशस्त्र क्रान्ति का रास्ता छोड़कर असहयोग आन्दोलन में शामिल हो गये, किन्तु असहयोग आन्दोलन को एकाएक वापस ले लेने से क्रान्तिकारियों की उम्मीदों पर पानी फिर गया। इन क्रान्तिकारियों ने पुनः अपना क्रान्तिकारी संगठन बनाना प्रारम्भ कर दिया। इसके नेता पुराने क्रान्तिकारी सचिन्द्र नाथ सान्याल, रामप्रसाद बिस्मिल तथा योगेश चन्द्र चटर्जी थे।

भगत सिंह

अशफाक उल्ला खाँ

काकोरी काण्ड

अक्टूबर 1924 ई0 में क्रान्तिकारी युवकों का कानपुर में एक सम्मेलन हुआ और ''हिन्दुस्तान रिपब्लिक एसोसिएशन'' का गठन किया गया। इसमें देश से अंग्रेजी सत्ता को जड़ से उखाड़ फेंकने तथा भारत को स्वतंत्र कराने का संकल्प लिया गया। संघर्ष छेड़ने के लिए धन का अभाव था। अतः इन क्रान्तिकारियों ने 9 अगस्त 1925 ई0 को लखनऊ के निकट काकोरी में एक रेलगाड़ी रोककर सरकारी खजाने को अपने अधिकार में ले लिया। बाद में वे पकड़े गये। इस लूटकाण्ड में पं0 रामप्रसाद बिस्मिल, रोशन सिंह, राजेन्द्र लाहिड़ी तथा अशफाक उल्ला खाँ को फाँसी दी गयी। अन्य व्यक्तियों को आजीवन कारावास की सजा देकर अण्डमान भेज दिया गया और 17 लोगों को लम्बी सजाएँ सुनायी गयीं। चन्द्र शेखर आजाद फरार हो गये।

लाला लाजपत राय

लाहौर काण्ड

भगत सिंह और राजगुरु ने दिसम्बर 1928 ई0 को साइमन कमीशन का विरोध करते हुए लाला लाजपत राय को लाठी से चोट पहुँचाने वाले पुलिस व्यक्तियों का नेतृत्व करने वाले अंग्रेज उच्च अधिकारी साण्डर्स की हत्या कर दी। सरकारी नीतियों के विरोध में 8 अप्रैल 1929 ई0 को भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने दिल्ली की केन्द्रीय विधान सभा में बम फेंका। बम से नुकसान नहीं हुआ। दोनों वहाँ से भागे नहीं और पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। भगत सिंह एवं उनके साथियों पर साण्डर्स हत्याकाण्ड से सम्बन्धित मुकदमा लाहौर में चलाया गया। 7 अक्टूबर 1930 ई0 को भगत सिंह, राजगुरु एवं सुखदेव को फाँसी की सजा सुनाई गयी।

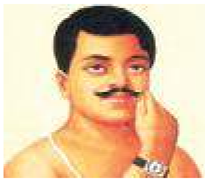

चन्द्र शेखर आजाद

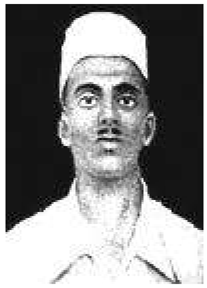

सुखदेव

लाहौर में उनको 23 मार्च 1931 ई0 को फाँसी दे दी गयी। यह मुकदमा ”लाहौर काण्ड“ के नाम से प्रसिद्ध है।

सत्ता के दमन ने धीरे-धीरे क्रान्तिकारी आन्दोलन को निर्बल कर दिया। 27 फरवरी, 1931 ई0 को इलाहाबाद के एल्फ्रेड पार्क में मुठभेड़ के दौरान चन्द्रशेखर आजाद शहीद हो गये। वर्तमान में एल्फ्रेड पार्क का नाम शहीद चन्द्रशेखर आजाद पार्क है। आजाद की मृत्यु के बाद पंजाब, उत्तर प्रदेश और बिहार में क्रान्तिकारी आन्दोलन लगभग समाप्त सा हो गया।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन 1930-1932

साइमन कमीशन-

1928 में अंग्रेज सरकार ने भारत के शासन के नियम बनाने के लिए साइमन नामक व्यक्ति के नेतृत्व में एक समिति बैठाई। इस समिति में एक भी भारतीय न था। इससे बिल्कुल स्पष्ट हो गया कि अंग्रेज सरकार यह मानने को तैयार नहीं है कि भारत के लोगों को अपने देश का शासन चलाने का अधिकार होना चाहिए। इसलिए भारत में साइमन जहाँ-जहाँ गया वहाँ उसके विरोध में जुलूस व हड़तालें हुईं और ”साइमन वापस जाओ“ का नारा जोरों से गूँजा।

साइमन कमीशन में भारत का कोई भी प्रतिनिधि नहीं था।

लाहौर अधिवेशन और पूर्ण स्वराज्य की माँग

1929 में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन लाहौर में शुरू हुआ। इस अधिवेशन के अध्यक्ष पं0जवाहर लाल नेहरू चुने गए। ब्रिटिश सरकार को नेहरू रिपोर्ट स्वीकार करने के लिए 31 दिसम्बर, 1929 की समय सीमा समाप्त हो चुकी थी इसलिए राष्ट्रीय कांग्रेस ने रावी नदी के तट पर 31 दिसम्बर, 1929 की रात्रि 12 बजे तिरंगा झण्डा फहराया और पूर्ण स्वराज्य की माँग का प्रस्ताव पारित किया।

डाँडी यात्रा

1930 ई0 के कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में कांग्रेस को सविनय अवज्ञा आन्दोलन करने का अधिकार दे दिया गया था। अतः गाँधी जी के नेतृत्व में स्वराज्य की प्राप्ति के लिए सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ किया गया। गाँधीजी ने 1930 ई0 में नमक कानून को तोड़कर सविनय अवज्ञा आन्दोलन का आह्वान किया। 12 मार्च, 1930 ई0 को गाँधीजी ने साबरमती आश्रम से अपने 78 सहयोगियों के साथ डाँडी की ओर यात्रा प्रारम्भ की। गाँधी जी ने समुद्र के किनारे नमक बनाकर अंग्रेजों का कानून तोड़ दिया।

इस सविनय अवज्ञा आन्दोलन में शीघ्र ही बहुत बड़ी संख्या में महिला एवं पुरुष स्वयं सेवकों ने भाग लिया। विदेशी माल का बहिष्कार किया गया। कहीं-कहीं किसानों ने लगान देना बन्द कर दिया। सरकार ने निर्मम दमन, निहत्थे स्त्री-पुरुषों पर लाठी और गोली की बौछार के द्वारा इस आन्दोलन को दबाने का प्रयास किया। 5 मई, 1930 ई0 को सरकार ने गाँधी जी को गिरफ्तार कर लिया। इसके विरोध में मद्रास (चेन्नई), कलकत्ता (कोलकाता) और कराची आदि नगरों में प्रदर्शन हुए और प्रदर्शनकारियों की विशाल भीड़ और पुलिस के बीच टकराव हुए।

महात्मा गाँधी की डाँडी यात्रा

पेशावर में जनाक्रोश की अभिव्यक्ति कई रूपों में देखने को मिलती है। यहाँ कांग्रेसी नेताओं की गिरफ्तारी को लेकर जनता ने अभूतपूर्व प्रदर्शन किया। इस इलाके में सीमान्त

गाँधी खान अब्दुल गफ्फार खाँ वर्षों से सक्रिय थे। उनके द्वारा जनता में किये गये कार्यों के कारण अहिंसक क्रान्तिकारियों के वीर जत्थे अर्थात् खुदाई खिदमतगारों के दल तैयार हुए थे। ये लोग ”लालकुर्ती“ के नाम से जाने जाते थे। सविनय अवज्ञा आन्दोलन में इनकी भूमिका काफी सक्रिय थी। इसी प्रकार देवबन्द शाखा की राजनीतिक संस्था जमाअत-उल-उल्मा-ए- हिन्द ने इस आन्दोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया।

खान अब्दुल गफ्फार खाँ

प्रथम गोलमेज सम्मेलन

इस बीच 1930 ई0 में ब्रिटिश सरकार ने लंदन में भारतीय नेताओं का पहला गोलमेज सम्मेलन आयोजित किया। इसका उद्देश्य साइमन कमीशन की रिपोर्ट पर विचार करना था। कांग्रेस ने इस सम्मेलन का बहिष्कार किया।

गाँधी-इरविन समझौता एवं सविनय अवज्ञा आन्दोलन

प्रथम गोलमेज सम्मेलन, लंदन, सन् 1930

5 मार्च, 1931 ई0 को सरकार और कांग्रेस में एक समझौता हुआ जिसे गाँधी-इरविन समझौता कहते है। गाँधीजी ने सितम्बर 1931 ई0 में दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया। उस सम्मेलन में गाँधीजी को कोई सफलता प्राप्त नहीं हुई। सम्मेलन से वापस लौटने पर गाँधीजी ने पुनः 1932 ई0 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ किया। सरकार ने गाँधीजी को बन्दी बना लिया। द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में दलितों के लिए अलग निर्वाचन की व्यवस्था की गयी थी। इससे गाँधीजी को

आघात लगा और उन्होंने आमरण अनशन प्रारम्भ कर दिया। अंततः डॉ0 अम्बेडकर और गाँधी जी के मध्य पूना में समझौता हुआ, जिसे ”पूना पैक्ट“ कहा जाता है। इसके अनुसार दलितों के लिए विधानमण्डलों में स्थान सुरक्षित कर दिये गये। पृथक निर्वाचन का निर्णय समाप्त कर दिया गया। 1934 ई0 में गाँधीजी ने अपना आन्दोलन बंद कर दिया और वह कांग्रेस से त्यागपत्र देकर हरिजनों के उद्धार में जुट गये।

और भी जानिए

- महिलाओं ने भी स्वतंत्रता संग्राम में बढ़-चढ़ कर भाग लिया।
- अरुणा आसफ अली ‘नमक कानून तोड़ो आन्दोलन’, ‘भारत छोड़ो आन्दोलन’ में भाग लेते हुए कई बार जेल गयीं।
- दुर्गाभाभी ने भगतसिंह को लाहौर जेल से छुड़ाने का प्रयास किया।
- कमला देवी चटोपाध्याय ने सन् 1921 में ‘असहयोग आन्दोलन’ में भाग लिया।
- भीकाजी कामा का कहना था, ”आगे बढ़ो, हम हिन्दुस्तानी हैं और हिन्दुस्तान हिन्दुस्तानियों का है।“ इन्होंने अंग्रेजों की परवाह न करते हुए भारत का पहला तिरंगा झण्डा फहराया।

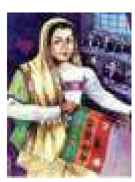

भीकाजी कामा

अभ्यास

(1) प्रथम गोलमेज सम्मेलन हुआ-

(क) सन् 1931 ई0 में (ख) सन् 1930 ई0 में

(ग) सन् 1934 ई0 में (घ) सन् 1929 ई0 में

2. अतिलघु उŸारीय प्रश्न-

(1) गांधी जी ने सत्याग्रह आंदोलन किस सन् में शुरू किया ?

(2) 13 अप्रैल 1919 को कौन सी घटना घटी थी ?

(3) 5 मार्च, 1931 ई0 को सरकार और कांग्रेस में कौन सा समझौता हुआ ?

3. लघु उŸारीय प्रश्न-

(1) डाँडी यात्रा किसने और क्यों की थी ?

(2) होमरूल लीग स्थापित करने का क्या उद्देश्य था ?

(3) रवीन्द्र नाथ टैगोर ने अपनी ‘सर‘ की उपाधि क्यों वापस कर दी ?

4. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

(1) असहयोग आंदोलन के बारे में लिखिए ?

5. प्रोजेक्ट कार्य

1. जिन महापुरुषों ने शांति और अहिंसा के सन्देश दिए, उनके नाम, पता करके लिखिए क्या आपके विचार से उनके द्वारा अपनाया गया अहिंसा का रास्ता सही था। आप कौन सा रास्ता चुनना चाहते और क्यों ?